प्रेरक प्रसंग

संकलन–सम्पादन

कंचन कुमार

फोन : 25217058

प्रकाशक :
दीप्ति प्रकाशन
208–ठ पश्चिम विहार एक्सटेंशन
नई दिल्ली –110 063

प्रकाशक

दीप्ति प्रकाशन

208–B पश्चिम विहार एक्सटेंशन,
नई दिल्ली–63

वितरक

गायत्री सत्संग सभा

पश्चिम विहार एक्सटेंशन, नई दिल्ली–63

संकलन–सम्पादन

कंचन कुमार

फोन : 25217058

मोबाईल : 9868204664

सेवा : 25/– रुपये मात्र

मुद्रक :

प्रिंट मीडिया (सुशील कौशिक)

फोन : 9818050590

जनहित में प्रसारित एवं वितरित

दो शब्द

प्रिय साधकों,

प्रस्तुत पुस्तक में महापुरुषों, संतों, महात्माओं के ऋषियों के अमृत वचन दृष्टांत रूप में संकलित किये गये हैं। जीव जब हिम्मत हारने लगता है। कष्टों से परेशान या निराशा में होता है तो संतों के प्रेरक प्रसंग प्रकाश पुंज का कार्य करते है एवं आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

देखा गया है कि बड़े–बड़े उपदेश छोटे–छोटे प्रसंगों से शीघ्र ग्रहण किये जा सकते हैं। दो घंटे के प्रवचन में जिस विषय को विस्तार से समझाया जाता है उसको प्रेरक प्रसंगों से रोचक एवं सरल बनाया जा सकता है।

मैंने अपने भजन कार्यक्रमों एवं सत्संगों में जिन प्रसंगों, सूक्तियों, हास्य प्रसंगों एवं शेरो–शायरी का प्रयोग किया उन्हें भी संकलित कर दिया है।

आशा है साधक संकलित संतों की वाणी, घटनाओं, दृष्टांत कथाओं से अवश्य लाभान्वित होंगे।

–कंचन कुमार

प्रसंग

1. मन का लोभ 6
2. आसक्ति से मुक्ति 7
3. सुंदर की शोभा असुंदर से है 8
4. संत और प्रचार 9
5. सच्चा पुत्र कौन 10
6. सन्यासी बनूं या गृहस्थ 11
7. घर–घर बने मंदिर 12
8. मातृभूमि प्रेम 13
9. शरीर और आत्मा 14
10. व्यर्थ श्रम 15
11. मानव धर्म 16
12. व्यर्थ वस्तु 17
13. संतोष 18
14. आशीर्वाद 19
15. नास्तिक से आस्तिक 20
16. वास्तविक त्याग 21
17. संत बनना सहज नहीं 22
18. उपकार 23
19. समर्पण का मार्ग 24
20. भ्रम 25
21. विश्वास 26
22. भगवान का वादा 27
23. जिसका काम उसी को साजे 28
24. भीतर की पवित्रता 29
25. संत का हृदय 30
26. स्वयं के प्रति सच्चा 31
27. असफलता में संयम 32
28. प्रभु प्रेरणा 33
29. वकील से संत 34
30. सम्मान किसमें 35
31. शांति का रहस्य 36
32. ईर्ष्या 37
33. क्षण को गुजर जाने दो 38
34. हजार के बराबर 39
35. सदुपयोग 40
36. परमात्मा का साथ 41
37. जीवन का रहस्य 42
38. सहनशक्ति 43
39. आस्पेंसकी की विनयशीलता 44
40. तपस्या नहीं जनसेवा करो 45
41. सत्यनिष्ठा का पुरस्कार 46
42. लोक कल्याण 47
43. लक्ष्मीबाई की चूड़ियां 48
44. धर्म का अर्थ 49
45. सेवा का अभिप्राय 50
46. भूख का महत्व 51
47. दान का फल 52
48. एकता में विजय 53
49. दूसरों के लिए 54
50. यह धन किसका 55
51. सबसे बड़ी क्षमा 56
52. कुसंग का असर 57
53. गहन अभ्यास 58
54. मौन की उपासना 59
55. पेड़ और ढेला 60
56. मन और कर्म 61
57. बंटवारे का समय 62
58. दृष्टि का भ्रम 63
59. शिक्षा का मार्ग 64
60. पूजा करने में ज्यादा सुख 65
61. न्याय 66
62. धैर्य 67
63. नेकी के लिए झूठ 68
64. दिग्विजय का योद्धा 69
65. समय की उड़न 70
66. निर्भिकता 71

67. अयोग्य 72
68. दया से बादशाही 73
69. असली ज्ञान 74
70. चादर का मोल 75
71. जान अजान 76
72. अमानत 77
73. समान की सेवा का व्रत 78
74. पटेल की बुद्धिमता 79
75. दासों का दास 80
76. सहायक 81
77. आत्मा की ज्योति 82
78. ब्रह्मा जी के थैले 83
79. राजधर्म 84
80. ईश्वर की माया 85
81. छोटी सलाह 86
82. अहंकार 87
83. सही का अर्थ 88
84. सब भले के लिए 89
85. सबसे बड़ा मूर्ख 90
86. भगवान्नम महिमा 91
87. द्रोपदी की शंका 92
88. स्वामी भक्त 93
89. परिस्थिति और प्रकृति 94
90. संभव 95
91. जहर का भय 96
92. जड़ की बात 97
93. परमात्मा 98
94. गद्दी की जिम्मेदारी 99
95. हस्ताक्षर 100
96. बीरबल की सोच 101
97. जरूरत 102
98. शास्त्री जी की सहनशीलता 103
99. सत्यव्रत झूठ नहीं बोला 104
100. अपने को खोजो 105
101. मानव व पशु 106
102. अंतर की आवाज 107
103. कर्म से भाग्य बदलता है 108
104. चालाक दादी माँ 109
105. विश्वास की परीक्षा 110
106. महावीर का संकल्प 111
107. धन से विरक्ति 112
108. बुलावे की प्रतीक्षा 113
109. एक सिक्का 114
110. धर्म का द्वीप 115
111. आपकी मूर्ति कहां है 116
112. इंसान का साथ 117
113. जैसी मन स्थिति वैसी सृष्टि 118
114. गुन अवगुन अन्तर बसहिं 119
115. खाली हाथ कैसे लौटा दें 120
116. मनुष्य के प्रकार 121
117. निस्पृहता 122
118. मेहनत की कमाई 123
119. दयालुता 124
120. कटु वाक्य 125
121. उजडे गांवों की क्या कमी 126
122. दूध और खून 127
123. सभ्यता और शिष्टाचार 128
124. सुलह 129
125. दया का असर 130
126. उचित दण्ड 131
127. सच्ची प्रार्थना 132
128. नम्रता का परिणाम 133
129. अपराधी कौन 134
130. शिक्षा कब तक 135
131. निदंक नियरे राखिये 136
132. विनम्रता 137
133. नक्लचियों की दशा 138
134. न जाने किस भेष में 139
135. रोगी और वैद्य 140
136. पक्षपात न किजीए 141